PANCHAKOTesSAYS
ISSN : 0976-4968
Vol-13, No.-1, May 2022

दलित समाज का अंतर्द्वन्द्व : 'धरती धन न अपना'

सोनी साव [1*]

[1*] प्राध्यापिका (सेक्ट), हिन्दी विभाग, पंचकोट महाविद्यालय, सरबड़ी, पुरुलिया, 723121 (प0 बं0).
Email: sonyshaw281@gmail.com

दलित जीवन के अंतर्द्वन्द्व को व्यक्त करती 'धरती धन न अपना' जगदीश चन्द्र द्वारा रचित उपन्यास है। इस उपन्यास को पढ़ते हुए समाज में दलितों के सामाजिक शोषण को गहरे स्तर पर महसूस किया जा सकता है। उपन्यासकार दलित न होते हुए भी दलितों की स्थिति और उनके संघर्ष को बहुत करीब से देखा है। उनकी स्थिति लेखक को लिखने के लिए निरन्तर उकसाती रही है। उसी का परिणाम 'धरती धन न अपना' जैसा उपन्यास है। उपन्यासकार इस तथ्य को इसी उपन्यास के प्रस्तावना 'मेरी ओर से' में स्वीकर भी करते हैं – ''अपने जातिगत संस्कारों तथा सामाजिक मान्यताओं की कठोर जकड़न के कारण मैं हरिजनों के जीवन की कटुताओं को स्वयं तो नहीं भोग सका, फिर भी मुझे अपने दुस्साहस के कारण उनके जीवन को बहुत निकट से देखने का अवसर अवश्य मिला है।''[1] स्वतंत्रता के बाद जहाँ लोगों को अपना देश मिला, स्वतंत्रता के साथ-साथ अनेक अधिकार मिल गया, वहाँ एक ऐसा तबका भी है जो आज तक अपने अनेकानेक अधिकारों के लिए संघर्षरत है। 1972 ई0 में लिखा गया यह उपन्यास आज भी अपने शीर्षक में प्रासांगिकता लिये हुए है। समय के बदलाव के साथ समाज में भी अनेक बदलाव आये हैं किन्तु नहीं बदला तो वह है दलितों की स्थिति।

जगदीश चन्द्र ने लगभग दस उपन्यास लिखे हैं जो इस प्रकार हैं – 'यादों के पहाड़', 'धरती धन न अपना', 'आधापुल', 'मुट्ठी भर काँकर', 'कभी न छोड़े खेत', 'टुण्डालाट', 'घासगोदाम', 'नरककुण्ड में वास', 'लाट की वापसी', 'जमीन अपनी तो थी'। 'धरती धन न अपना' की कथावस्तु का विस्तार 'नरककुण्ड में वास' तथा 'जमीन अपनी तो थी' में देखने को मिलता है।

'धरती धन न अपना' हाशिये पर पड़े दलितों की सामाजिक स्थिति तथा उनके जीवन के अनेक पक्षों को उजागर करती है। इस उपन्यास का प्रमुख पात्र 'काली' है। वह अशिक्षित होते हुए भी प्रगतिशील सोच का प्रतिनिधित्व करता है। वह छः सालों के बाद शहर से अपने गाँव 'घोड़ेवाहा' लौटता है। गाँव के अन्दर प्रवेश करने के कुछ क्षण बाद ही गाँव लौटने की खुशी खत्म होने लगती है और वह वापस शहर लौट जाना चाहता

है मगर अनायास ही उसे उसकी चाची 'प्रतापी' का ख्याल आता है। चाची का ख्याल हृदय में भय उत्पन्न करता है। हृदय के इस भय को लिये 'काली' गाँव की तंग और दुर्गंध से भरे रास्ते को पार कर अपने घर पहुँचता है। 'काली' को देखकर चाची की खुशी आसमान छू लेती है। वह अपने पुत्र रूपी भतीजे को देखकर रो पड़ती है। 'काली' के माता-पिता के मृत्यु के बाद चाची ने बड़े प्रेम से 'काली' को पाला-पोसा था। 'काली' गाँव की स्थिति को जानता था। वह जानता था कि गाँव में दलित होने के कारण कितना जलील होना पड़ता है। ठाकुरों का जब मन आया किसी भी चमार को गालियाँ देते, मारते-पीटते थे। उनके जीवन को अपनी जागीदारी समझते थे। 'काली' को यह स्वीकार नहीं कि केवल चमार जाति का होने के कारण यह शोषण सहना पड़े। शोषण का विरोध करते हुए, वह कहता है - ''चाची, चौधरी ने जीतू को नाजायज मारा है। उसका कोई कसूर नहीं था। अगर जीतू की जगह मैं होता तो चौधरी की बाँह मरोड़ देता।''[2] काली अपने कोठे को पक्का मकान बनाना चाहता है। जब शोषित वर्ग ऊपर उठने की कोशिश करता है, तब शोषक यह सह नहीं पाता है और उसे नीचे ढकलेने के लिए उस पर और अधिक दबाव डालता है। काली पक्का मकान बनाने के लिए छज्जू साह से थोड़े पैसों की मदद माँगता है किन्तु वहाँ जाने पर उसे पता चलता है कि जिस जमीन में वह अपना मकान बनाना चाहता है, वह जमीन भी उसकी नहीं है। ''कालीदास, जिस जमीन की तुम बात कर रहे हो वह जमीन भी तुम्हारी नहीं है। वह शामलात (गाँव के जमींदारों की साझी जमीन) जमीन है। जब तक तू या तेरी वारिस (उत्तराधिकारी) इस गाँव में रहेंगे, जमीन का वह टुकड़ा रिहायश के लिए तुम्हारा है। बाद में उसका मालिक गाँव होगा। वह तेरी मालकियती जमीन नहीं है, मौरूसी जमीन है।''[3] लेकिन काली हार नहीं मानता है। वह जीतू की सहायता से काम शुरु करता है। अभी वह कच्चे निशानों को पक्का ही कर रहा था कि निक्कू सिर पर चादर लपेटे और हाथ में पतली सी लाठी पकड़े काली के सामने आ खड़ा होता है। चौधरियों के तलवे चाटने वाला मंगू द्वारा उकसाये निक्कू और उसकी पत्नी प्रीतो काली को बुनियाद खोदने से रोकते हैं। दोनों में आपसी द्वन्द्व बढ़ता ही जाता है। अन्त में बात पंचायत तक पहुँच जाती है, जहाँ फैसला 'काली' के हक में होता है। इन सब घटनाक्रम में 'ज्ञानो' और 'काली' एक दूसरे के प्रति आकर्षित होते जाते हैं। ज्ञानो, काली के घर आना-जाना शुरु कर देती है। गाँव के लोग गरीबी की चरम सीमा पर थे। गाँव के कई घर तो ऐसे थे जिनके घर में अन्न का एक दाना भी नहीं था। बच्चों के पेट वैसे ही खाली थे जैसे कोई बर्तन। दलित होने के कारण प्रीतो की पुत्री लच्छो पर 'हरदेव चौधरी' गंदी नजर डालता है। गाँव के दलितों को दरिद्रता शहर पलायन करने तथा धर्म परिवर्तन करने के लिए विवश करती है। 'नन्द सिंह' को लगता है यदि वह धर्म परिवर्तन कर ले तो उसकी स्थिति सुधर जायेगी

और वह पहले सिख बनता है और फिर ईसाई धर्म अपना लेता है। फिर भी वह चौधरियों के नजर में चमार ही रहता है। 'नन्दसिंह' 'चमार' शब्द से ही घृणा करता है। ''गाँव में चमार होना तो सबसे बड़ा पाप है। घोर लांछन है। दो कौड़ी का मालिक काश्तकार अपने चमार को छठी का दूध पिला देता है। मुझे 'चमार' शब्द से ही नफरत है। मुझे कोई चमार कहे तो गुस्सा आ जाता है।''[4] हमारे समाज की विडम्बना है दलित कितना भी अच्छा कार्य क्यों न कर ले उसके कार्य को महत्व नहीं दिया जाता है। उनके प्रति घृणा की भावना में कमी नहीं आती है। ''जात कर्म से नहीं, जन्म से बनती है। अगर चमार कहलवाना पसन्द नहीं तो किसी और माँ के पेट से जन्म लिया होता।''[5] वर्ण व्यवस्था का निर्माण कर्म के आधार पर किया गया था, जाति के आधार पर नहीं। परन्तु सवर्णों अपने लाभ के लिए इसे जन्म पर आधारित बताते हैं। जन्म के आधार पर बताकर, वे अपने वर्चस्व को बचाना चाहते हैं। इसी बीच चाची की तबीयत खराब होने लगती है और वह झाड़-फूँक के चक्करों में फँस जाता है और अन्ततः अंधविश्वास और अशिक्षा के घेरे में आकर काली अपनी प्रिय चाची को खो देता है। 'काली' का क्रांतिकारी स्वर बार-बार शोषण के खिलाफ आवाज उठाने को मजबूर करता है। उसे स्वीकार नहीं है कि केवल जाति के आधार पर उसका या उसके वर्ग का अपमान चौधरी करता रहे। सावन के दिनों में वर्षा का पानी 'चो' से होता हुआ चमादड़ी की गलियों में भर जाता है। जिसके कारण लोगों में चिन्ता का माहौल बन जाता है। यह स्थिति चमादड़ी के लोगों के जीवन को अस्त-व्यस्त कर देती है। भोजन के अभाव के साथ-साथ पीने के पानी का अभाव उनके लिए गम्भीर समस्या के रूप में सामने आती है। चमार जाति होने के कारण चौधरियों के घर से पानी भी लेने की अनुमति नहीं थी। वहीं स्वयं को धर्मात्मा कहने वाला पंडित 'संतराम' भी पानी भरने नहीं देता है। उसका मानना है कि मन्दिर में चमार के प्रवेश करने पर मन्दिर की पवित्रता नष्ट हो जायेगी।

दलित के जीवन का एक पक्ष यह भी है कि उन्हें उनके श्रम का पैसा तक सही रूप से नहीं मिलता है। उनके ही पैसे हड़प कर शोषक वर्ग दलितों का शोषण करते हैं। दलितों को अपने श्रम के फल के रूप में मिलती है तो केवल गालियाँ। गाँव वाले अपने दिहाड़ी के पैसे माँगते हैं तब चौधरी गालियाँ देकर पैसे देने से इन्कार कर देता है। काली काम को अधूरा छोड़कर जाने लगता है उसे जाता देख सभी उसके पीछे-पीछे चले जाते हैं। काली को इस तरह अपने अधिकार के लिए लड़ते देख सबसे अधिक प्रसन्नता 'डॉ0 बिशनदास' को होती है। वह मन ही मन सोचते हैं कि ''मेहनतकश तबका (श्रमिक वर्ग) जब जाग उठता है तो दुनिया की कोई भी ताकत उसका मुकाबला नहीं कर सकती।''[6] काली अपने अधिकार के लिए लड़ते हुए अकेला हो जाता है। चौधरियों का बाईकॉट करने के बाद फिर से सभी चमादड़ी के लोग चौधरियों के घर काम करने को विवश हो

जाते हैं। काली और ज्ञानो के प्रेम की परिणति भी अन्त में दुखद होती है। ज्ञानो के विवाह पूर्व गर्भवती हो जाने से ज्ञानो की माँ 'जस्सो' ज्ञानो को जहर देकर मार देती है। काली के प्रेम प्रसंग के कारण काली को गाँव में कोई काम नहीं मिलता और वह पुन: गाँव छोड़कर शहर जाने की सोचता है। काली अपने दलित होने के बोझ तले दबते-दबते कहीं खो जाता है और उपन्यास अन्त में एक प्रश्न चिन्ह छोड़ जाता है कि कब तक दलितों की स्थिति समाज में ऐसी ही बनी रहेगी। कब तक समाज के पूँजीपति वर्ग के शोषण की चक्की में दलित वर्ग पीसता रहेगा।

लेखक की भाषा अत्यन्त ही सहज, सरल एवं प्रवाहमयी है। इसमें 'पंजाब' के 'घोड़ेवाहा' गाँव की लोक भाषा, लोक गीत का प्रयोग किया गया है। लेखक ने इतना सूक्ष्म वर्णन किया है कि पाठक दलितों के जीवन की इस त्रासदी को पढ़कर व्याकुल हो उठता है। अपने समाज में दलित के प्रति हो रहे व्यवहार के बारे में सोचने को विवश हो जाता है।

जगदीश चन्द्र का यह उपन्यास सामाजिक सन्दर्भों से जुड़ा हुआ है। 'धरती धन न अपना' उपन्यास में मुख्यत: भूमिहीन दलितों को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है। समाज में अपनी अलग पहचान बनाने तथा समाज में अपने अस्तित्व की खोज को लेखक ने 'काली' के माध्यम से दिखाने का भरसक प्रयास किया है। यह उपन्यास काली तथा गाँव के अन्य दलित लोगों की समस्या, उनके जीवन के उतार-चढ़ाव, अपने अधिकार की माँग तथा उनके जीवन के संघर्ष को दिखाने में सार्थक प्रयास करती है।

संदर्भ

1. चन्द्र जगदीश, धरती धन न अपना, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, तीसरा संस्करण-2007, पृष्ठ – मेरी ओर से
2. वही, पृष्ठ संख्या-27
3. वही, पृष्ठ संख्या-55
4. वही, पृष्ठ संख्या-190
5. वही, पृष्ठ संख्या-200
6. वही, पृष्ठ संख्या-239